(18)

अक्षरा

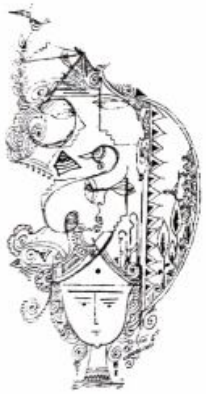

बिजेन्द्र कुमार

188

कैलाशचन्द्र पन्त
प्रधान सम्पादक

सुशील कुमार केडिया
प्रबंध सम्पादक

डॉ. सुनीता खत्री
सम्पादक

बिजेन्द्र कुमार

श्रीमती-जया केतकी
सम्पादन सहयोग

सुधा बाथम
अक्षर-संयोजन

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 300 रुपए
दस वर्षीय सदस्यता शुल्क : 3000 रुपए
एक प्रति 25 रुपये
विदेशों के लिए : एक अंक : 5 डॉलर, वार्षिक : 60 डॉलर

चेक या ड्राफ्ट 'म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति- 'अक्षरा' के नाम देय
ऑनलाइन पेमेंट के लिये- इंडियन बैंक, हिन्दी भवन शाखा, भोपाल
Ac/ No. 50413818696, IFSC-ALLA0212241

सम्पर्क : म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462002 (म.प्र.)
दूरभाष : 0755- 2660909, 2661087, ई-मेल - myakshara18@gmail.com
hindibhavan 2009@rediffmail.com
वेबसाइट - www.akshara page, www.madhyapradeshrashtrabhasha.com

अक्षरा

अंक 188 नवंबर 2020

सम्पादकीय

सबद निरंतर

अदला-बदली : **रमेशचन्द्र शाह** 7

आलेख

कृष्ण बिहारी मिश्र के दो ललित निबंध : **अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी** 10
छायावादी काव्य में मातृभूमि वंदना : **सदानन्दप्रसाद गुप्त** 15
वर्तमान चुनौतियाँ और आज का साहित्य : **रंजना अरगड़े** 21
सनातन गाँधी 'महात्मा इन मेकिंग' पर पुनर्विचार : **अम्बिकादत्त शर्मा** (पिछले अंक से आगे) 26
जनमाध्यमों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से सृजित मूल्य : **कुमुद शर्मा** 32
दिनमान के सम्पादक और उनका योगदान : **मनीषचंद्र शुक्ल** 37
विष्णु नागर की कहानी : शैली मेरी बाकी उसका : **सरिता कुमारी** 40
रामचरितमानस में वर्णित राम राज्य की प्रासंगिकता : **बिजेन्द्र कुमार** 43
हिंदी गद्य साहित्य में राष्ट्रीयता : **सुरेन्द्र कुमार जैन** 49
आधुनिक असमिया कहानियों के नारी पात्रों में विद्रोही स्वर : **कुल प्रसाद उपाध्याय** 52
समकालीन हिंदी सिनेमा और सामाजिक संदर्भ : **विजय कुमार मिश्र** 57
लोकविधा और गुमनाम कलाकारों का दस्तावेज : सुर बंजारन : **नेहा गुप्ता** 61
जाम्भाणी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन : संत वील्होजी : **प्रेम सिंह** 66

ललित निबन्ध

एक दीया होता है : **सुमन चौरे** 70

कहानी

खुलती गाँठे : **आर. एस. खरे** 75
अपनी-अपनी संतुष्टि : **श्याम नारायण श्रीवास्तव** 79

लघुकथा

मार्गदर्शन : **सीमा वर्मा** 83
स्वयंसिद्धा : **नम्रता सरन सोना** 85

रामचरितमानस में वर्णित राम राज्य की प्रासंगिकता

- बिजेंद्र कुमार

जन्म - 15 मार्च 1979।
जन्म स्थान - जलमाना, पानीपत, (हरियाणा)।
शिक्षा - एम.फिल., पीएच.डी।
रचनाएँ - पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

प्राचीन काल में भारतवर्ष की पहचान आध्यात्मिक एवं विश्व गुरु के रूप में थी। जहाँ मानव का प्रत्येक कर्म विश्व मानवता की भलाई एवं परम तत्त्व की प्राप्ति, जिसको हम लोग मोक्ष कहते हैं के लिए समर्पित था। वह मानव के साथ पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, नदियों-समुद्रों आदि से प्रेम करता था। यूँ कहें कि वह प्रकृति प्रेमी था, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। लेकिन आज का सुविधा भोगी, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान से संपन्न व्यक्ति इतना भौतिकवादी हो गया है कि उसके लिए परिवार, समाज, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, प्रकृति आदि का कोई महत्त्व नहीं रहा। वह प्रकृति रूपी परमात्मा को ही भूल गया जिस कारण वह प्रकृति का नित्य प्रति शोषण करने लगा, शाकाहारी होने की बजाय मांसाहारी बन गया। इन सब का परिणाम हुआ वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि। जिसके फलस्वरूप स्वाइन फ्लू, प्लेग, तपेदिक, दमा और आज की नवल करोना-19 जैसी भयंकर महामारियाँ फैल रही हैं जिसने मानव जीवन को पंगु बना कर रख दिया। ऐसे में सम्पूर्ण मानव जाति को गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में वर्णित राम राज्य की व्यवस्था को अपनाना होगा। जहाँ राजा राम जी के परिवार में सद्भाव है, संपूर्ण प्रजा में आपसी सहयोग, प्यार-प्रेम एवं एकता, नदियों, तालाबों, पहाड़ों आदि के प्रति पूजनीय भाव, पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम, फूलों, लताओं, वृक्षों के प्रति सम्मान का भाव विराजमान है।

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में जिस समय गोस्वामी तुलसीदास ने जन्म लिया, उस समय राजनीति, धर्म, समाज, अर्थ, संस्कृति आदि में उथल-पुथल मची हुई थी। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। भाई-भाई के रक्त का प्यासा था। ऐसा लगता था कि समाज में समता-समानता, भाईचारे जैसी कोई चीज है ही नहीं। राजा अपने स्वार्थ के हितार्थ जनता पर अनेक प्रकार के कर लगाता था। वह अय्याशी का जीवन जीने के लिए साधारण जनता पर अन्याय-अत्याचार करता था। धर्म के नाम पर पाखंडों-आडम्बरों का बोलबाला था। अशिक्षित प्रजा पंडितों-मौलवियों के हाथों की कठपुतली बनकर रह गई। जनता भुखमरी, बेरोजगारी एवं बीमारियों की शिकार थी। समाज में किसी भी वर्ग, क्षेत्र आदि में कहीं भी शांति-संतोष नहीं रह गया था। प्रकृति का निरंतर दोहन हो रहा था। ऐसे में तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य 'रामचरितमानस' में राजा राम के द्वारा स्थापित राज्य का वर्णन किया, जिसका अनुसरण करके राज्य, समाज, धर्म, प्रकृति आदि में सुव्यवस्था स्थापित कर, जनता का कल्याण किया जा सके।